International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

मध्य भारत के शक्ति संतुलन में पिंडारियो के संघर्ष का ऐतिहासिक विश्लेषण

शोधार्थी – विराग जैन [1]

शोध निर्देशक – डॉ. सुनीता मालवीय [2]

पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस अटल बिहारी वाजपेयी गवर्नमेंट आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज. इंदौर

सारांश -

पिंडारी मध्य भारत के शक्ति संतुलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अनियमित घुड़सवार थे, जो 17वीं से 19वीं शताब्दी तक सक्रिय रहे। मूल रूप से, वे मुगल सेना के साथ जुड़े थे, बाद में मराठा सेनाओं के साथ काम करने लगे, और अंततः स्वतंत्र रूप से लूटपाट करने लगे। पिंडारियों का उल्लेख पहली बार 1689 में औरंगजेब के दक्कन अभियान के दौरान मिलता है। वे मुख्य रूप से मुस्लिम थे, हालांकि उनकी जाति और धर्म मिश्रित थे। पिंडारी समूहों में सिंधिया शाही और होल्कर शाही प्रमुख थे, जो मराठा सरदारों से जुड़े थे। 1800-1815 के दौरान, उनकी संख्या 20,000 से 30,000 तक पहुंच गई, जो स्थानीय सुल्तानों और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए खतरा बन गए। पिंडारी हमलों से मध्य भारत में व्यापक आर्थिक और सामाजिक नुकसान हुआ । 1817-1818 में लॉर्ड हेस्टिंग्स के नेतृत्व में ब्रिटिशों ने पिंडारी युद्ध शुरू किया। इस युद्ध में पिंडारियों को पराजित किया गया, और उनके कई नेता पकड़े गए या मारे गए। इस जीत से ब्रिटिशों ने मध्य भारत में अपनी पकड़ मजबूत की। यह शोध पिंडारियों की मध्य भारत के शक्ति संतुलन में बदलाव और ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार को दर्शाता है ।

मूलशब्द – मध्यभारत, ब्रिटिश साम्राज्य, पिंडारी, आर्थिक और सामाजिक नुकसान, मुगल

➢ प्रस्तावना –

17वीं शताब्दी (1601–1700 ईस्वी) में मध्य भारत (विशेषकर वर्तमान मध्य प्रदेश का क्षेत्र) राजनीतिक अस्थिरता, मुगलों के विस्तार और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय का केंद्र था। इस शताब्दी के दौरान मध्य भारत पर मुख्य रूप से जहाँगीर (1605–27), शाहजहाँ (1628–58) और औरंगजेब (1658–1707) का शासन रहा। मांडू, उज्जैन और ग्वालियर मुगलों के महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सैन्य केंद्र थे। मुगलों ने इस क्षेत्र का उपयोग दक्षिण (दक्कन) अभियानों के लिए एक आधार के रूप में किया। मध्य भारत में उसी समय कुछ स्थानीय शक्तियों का उदय हुआ जिसमें बुंदेलखंड गोंडवाना बघेलखंड और मराठों के आगमन से

मध्य भारत का मानचित्र समय-समय पर परिवर्तित होता गया।[1] 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महाराजा छत्रसाल ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया और बुंदेलखंड में एक स्वतंत्र राज्य की नींव रखी। गढ़-मंडला के गोंड राजाओं (जैसे राजा प्रेम शाह) का इस क्षेत्र के बड़े हिस्से पर प्रभाव बना रहा, हालांकि वे मुगलों को कर (Tribute) देते थे। रीवा के बघेल शासकों ने भी अपनी स्वायत्तता बनाए रखने के लिए मुगलों के साथ संघर्ष और समझौते की नीति अपनाई। शताब्दी के अंतिम दशकों में, छत्रपति शिवाजी महाराज के नेतृत्व में मराठा शक्ति का उदय हुआ। 1680 के बाद औरंगजेब के दक्कन युद्धों के दौरान मराठों ने मालवा और मध्य भारत के अन्य क्षेत्रों में अपनी पहुँच बनानी शुरू कर दी थी, जो आगे चलकर 18वीं शताब्दी में मराठा वर्चस्व का कारण बनी।[2]

पिंडारी (मराठी : पेंढारी) दक्षिण पश्चिम भारत के योद्धा थे जिनमें हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्म के लोग थे। ये मिलकर युद्ध किया करते थे।[3] उनकी उत्पत्ति तथा नामकरण विवादास्पद है। वे बड़े कर्मठ, साहसी तथा वफादार थे। टट्टू उनकी सवारी थी। तलवार और भाले उनके अस्त्र थे। वे दलों में विभक्त थे और प्रत्येक दल में साधारणत: दो से तीन हजार तक सवार होते थे। योग्यतम व्यक्ति दल का सरदार चुना जाता था। उसकी आज्ञा सर्वमान्य होती थी। पिंडारियों में धार्मिक संकीर्णता न थी।[4] 18वीं शताब्दी में पासी जाति भी उनके सैनिक दलों में शामिल थे। उनकी स्त्रियों का रहन-सहन हिंदू स्त्रियों जैसा था। उनमें-देवी देवताओं की पूजा प्रचलित थी। इटावा से 22 किलोमीटर दूर एक गांव पिंडारी है कहा जाता है जब मराठा सेना की तरफ से कुछ ब्राह्मण पिंडारी योद्धाओं ने युद्ध किया था बाद में वो यहीं स्थाई तौर से बस गए । इनको बाजीराव पेशवा बल्लाल के वंश से जुड़ा बताया जाता है।

मराठों की अस्थायी सेना में उनका महत्वपूर्ण स्थान था। पिंडारी सरदार नसरू ने मुगलों के विरुद्ध शिवाजी की सहायता की। पुनापा ने उनके उत्तराधिकारियों का साथ दिया। गाजीउद्दीन ने बाजीराव प्रथम को उसके उत्तरी अभियानों में सहयोग दिया। चिंगोदी तथा हूल दोनो सगे भाई थे जो जाति के पासी थे उनके नेतृत्व में 15 हजार पिंडारियों ने पानीपत के युद्ध में भाग लिया। अन्त में वे मालवा में बस गए और सिंधियाशाही तथा होल्करशाही पिंडारी कहलाए। हीरू और बुर्रन उनके सरदार थे। बाद में चीतू, करीम खाँ, दोस्तमुहम्मद और वसीलमुहम्मद सिंधिया की पिंडारी सेना के प्रसिद्ध सरदार हुए तथा कादिर खाँ, तुक्कू खाँ, साहिब खाँ और शेख दुल्ला होल्कर की सेना में रहे।[5]

पिंडारी सवारों की कुल संख्या लगभग 50,000 थी। युद्ध में लूटमार और विध्वंस के कार्य उन्हीं को सौंपे जाते थे। लूट का कुछ भाग उन्हें भी मिलता था। शांतिकाल में वे खेतीबाड़ी तथा व्यापार करते थे। गुजारे के लिए उन्हें करमुक्त भूमि तथा टट्टू के लिए भत्ता मिलता था।[6]

पिंडारी शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में भाषाविद् एकमत नहीं हैं इसके बावजूद जो भी अंदाज़ इस संदर्भ में सामने आए हैं वे कहीं न कहीं एक दूसरे से जुड़ते ज़रूर हैं और महाराष्ट्र या दक्षिण भारत का इससे रिश्ता है। लुटेरे पिंडारी लूट और ठगी की वारदात को अंजाम देने के अंतिम क्षणों में नशे का सेवन करते थे।[7] इस संदर्भ में एक पुरानी शराब पिंडा का उल्लेख आता है जिसका संभवतः पिंडारी सेवन करते थे। इसका कोई ठोस आधार नहीं है। बीदर bidar का उल्लेख किया जाता है। आम मान्यता है कि कंपनी राज में महाराष्ट्र के विदर्भ को बीदर कहा जाने लगा। मगर इसका चलन तो इससे भी सैकड़ों साल पहले मुस्लिम राज के दौरान हो चुका था। पिंडारी से बीदर का साम्य, प और ब ध्वनियों के आपसी बदलाव और विदर्भ क्षेत्र में उनकी सर्वाधिक मौजूदगी के चलते व्युत्पत्ति का यह आधार सामने आता है। विदर्भ से बीदर, फिर पिन्दर और फिर पिंडारी। यह अनुमान मात्र है। एक अन्य व्युत्पत्ति है संस्कृत के पिण्ड से जिसका मतलब होता है वजन, घन, ठोस, गोला, समूह, सेना, दल समूह आदि। समूह के तौर पर पिण्ड का प्रयोग पंजाबी में जनसमूह या ग्राम के रूप में भी होता है। पिण्ड शब्द मराठी समेत दक्षिण भारतीय भाषाओं में इस्तेमाल होता है। संभव है, पिंडार नें समूहवाची के रूप में उक्त अर्थवत्ता हासिल की हो।

गौरतलब है कि मराठों की सेना में भारी तादाद में मुस्लिम-अफ़गान योद्धा भी थे। मुगल सेना के छिटके हुए या अफ़गानिस्तान से पलायित कई लड़ाकों को मराठों की फौज में जगह मिलती रही थी। फौज का हिस्सा बनना हर काल में आजीविका का जरिया रहा है। प्रायः हर शासक की फौज में विदेशज मूल के योद्धा भी होते थे। ऐसा लगता है, पिंडारी मूलतः फौज के लश्करी अर्थात भारवाहक थे यानी सेना के साजो-सामान को ढोने वाले हथियारों के जखीरे की सार-संभाल करनेवाले श्रमजीवी। जो भारी और मेहनत का काम करें, वे पिंडारी। रोजगार छिनने पर आजीविका के लिए ठगी-लूट जैसा पेशा अपनाने की मजबूरी समझी जा सकती है। इसके मूल में संभवतः सांस्कृतिक विभेद रहा हो। एक एक अन्य व्युत्पत्ति भी स्थान विषयक ही है और इसे पंढर क्षेत्र से जोड़ा जाता है। यह इसलिए मान्य नहीं है क्योंकि पंढर क्षेत्र दरअसल पंढरपुर के नाम से जाना जाता है जो भगवान पाण्डुरंग अर्थात विठोबा का घर है। मूलतः यह नाम भगवान पाण्डुरंग के नाम से पाण्डुरंगपुर कहलाया जो बाद में पंढरपुर बना।[8]

पिंडारी एक जगह से नहीं आते थे। वे किसी भी क्षेत्र में घुसकर वहां के लोगों को लूट लेते थे। उनका मुख्य कारण यह था कि वे अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए दूसरों की संपत्ति लूटते थे। पिंडारी इस बात से घबराते नहीं थे कि उनकी लूट को पकड़ने के लिए कोई सेना आ सकती है। वे हमेशा गुप्त तरीके से, चुपचाप और तेज़ी से हमला करते थे ताकि कोई उन्हें पकड़ न सके। वे बड़े समूहों में नहीं आते थे, बल्कि छोटे-छोटे दलों में रहते थे और बहुत तेज़ी से हमला करते थे।[9]

पिंडारी किसी एक धर्म के नहीं होते थे। हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के लोग पिंडारी बन सकते थे। पिंडारी की यह आदत थी कि वे अपने साथ कोई सामान या खाना नहीं लाते थे। वे जो कुछ भी लूटते थे, उसी से अपनी ज़रूरतें पूरी करते थे, जैसे कि

खाने-पीने की चीज़ें और घोड़ों के लिए घास आदि। उनके पास आमतौर पर लंबे बांस के भाले होते थे, जो उनका मुख्य हथियार होते थे। कुछ पिंडारी बंदूकें भी इस्तेमाल करते थे, लेकिन ज्यादातर वे भाले और छुरे से हमला करते थे। उनकी खासियत यह थी कि वे इतने तेज़ थे कि कोई भी उन्हें देख नहीं पाता था। उनका हमला इतना अचानक और तेजी से होता था कि किसी को भी उनके बारे में जानकारी नहीं मिल पाती थी। वे ऐसे हमले करते थे कि किसी को यह समझने का मौका नहीं मिलता कि वे कहाँ से आए थे और कहाँ चले गए थे। कुल मिलाकर, पिंडारी एक असंगठित, लूटपाट करने वाला समूह था, जो किसी भी जगह पर घुसकर वहां के संसाधनों को लूट लेता था। वे डरपोक नहीं थे, बल्कि बहुत चतुर और तेज़ थे, और हमेशा छिपकर हमला करते थे ताकि उन्हें पकड़ने का कोई मौका न मिले।[10]

➢ मध्यभारत मे पिंडारी और मराठा

पिंडारी की उत्पत्ति के बारे में कई सिद्धांत हैं, लेकिन उनकी उत्पत्ति का पहला उल्लेख 1689 में मिलता है, जब मुगलों ने महाराष्ट्र पर आक्रमण किया। बाद मे, बाजीराव प्रथम के समय में, पिंडारी मराठा सेना के असामान्य घुड़सवार के रूप में देखे गए थे। ये घुड़सवार बिना वेतन के सेवा करते थे और बदले में लूट की छूट प्राप्त करते थे। पानीपत की लड़ाई (1761) के बाद, पिंडारी प्रमुख रूप से मालवा में बस गए और मराठा सरदारों जैसे सिंधिया, होलकर और निजाम के सहायक के रूप में कार्य करने लगे। इन्हें सिंधिया शाही पिंडारी, होलकर शाही पिंडारी और निजाम शाही पिंडारी कहा जाता था। मल्हार राव होलकर ने एक पिंडारी प्रमुख को सोने का ध्वज दिया था, और 1794 में सिंधिया ने पिंडारियों को नर्मदा घाटी में ज़मीनें दी थीं। इस तरह पिंडारी धीरे-धीरे शक्तिशाली बन गए।

ब्रिटिश लेखक मैल्कम ने मराठों और पिंडारियों के बारे में कुछ इस तरह लिखा था, "मराठों ने शुरू से ही पिंडारियों को अपने अधीन किया था, और पिंडारियों की आदतें और उनका तरीका उसी हिसाब से बदलने लगा, जैसा काम उन्हें करना पड़ा था।" जैसे-जैसे मराठों की ताकत कमजोर हुई, वैसे-वैसे पिंडारी एक स्वतंत्र (खुद से अलग) समूह के रूप में सामने आए। अब वे उन मराठा सरदारों की संपत्ति लूटने लगे, जिनकी वे पहले मदद करते थे और जिनकी सेवा करने का दावा करते थे। ब्रिटिश लेखकों जैसे मैल्कम, प्रिंसिप, डफ, कर्नल टोड और थॉर्नटन ने पिंडारियों के लूट के हमलों का विस्तार से वर्णन किया है।[11]

➢ मध्यभारत मे पिंडरियो का फैलाओ

मुगल साम्राज्य की कमजोरी, राज्यों में भ्रष्टाचार और मराठों के लगातार हमलों ने भारत में ऐसी स्थिति पैदा कर दी थी, जिससे पिंडारी एक "सड़न" की तरह उभरे। जब पूरे देश में राजनीतिक अस्थिरता और अराजकता फैली, तो बहुत से लोग शांति से

काम करने की बजाय लूटपाट की ओर बढ़े। लूट का जीवन ईमानदारी से काम करने से कहीं आसान था, और पिंडारी सेना के सदस्य इस समय तेजी से बढ़े।

ईस्ट इंडिया कंपनी के सहायक राज्यों द्वारा पेशेवर सैनिकों की छंटनी के बाद, पिंडारी सेना में और लोग शामिल हुए। इस समय पिंडारियों ने पूरे भारत में दुख और तबाही फैलानी शुरू की। कई किसान, जिनके पास कोई और रास्ता नहीं था, पिंडारी दल में शामिल हो गए। इस प्रकार, पिंडारी कोई विशेष समूह नहीं थे, बल्कि एक ऐसी प्रणाली बन गए जो उन्हीं दुखों से पोषित होती थी, जिन्हें वे खुद पैदा करते थे। यह समय भारत में एक बड़ा संकट था, जब पिंडारी अराजकता और लूटपाट के प्रतीक बन गए।

➢ पिंडारियों के प्रमुख नेता

19वीं शताब्दी के आरंभ में प्रमुख पिंडारी नेता थे चितू, वसील मुहम्मद और करीम खान। पिंडारी धीरे-धीरे अपनी गतिविधियों का क्षेत्र बढ़ाते गए और 1812 में मिर्जापुर और शाहाबाद जैसे ब्रिटिश इलाकों पर हमला किया। 1815 में, उन्होंने निजाम के राज्य पर हमला किया, और 1816 में उत्तरी सरकार के क्षेत्रों को लूटा।

➢ मध्यभारत मे पिंडारी और ब्रिटिश सरकार

कुछ ब्रिटिश लेखकों जैसे V.A. स्मिथ, P.E. रॉबर्ट्स और S.M. एडवर्ड्स ने एक मिथक फैलाया था कि पिंडारी लुटेरे, अफगान लड़ाके और मराठा सरदार आपस में मिले हुए थे, और मराठा सरदार दौलत राव सिंधिया पिंडारियों के 'नेता' थे। उनका मानना था कि गवर्नर-जनरल को सिर्फ पिंडारियों से ही नहीं, बल्कि मराठा सरदारों से भी निपटना था ताकि पिंडारियों को मदद न मिल सके।

लेकिन हाल की रिसर्च ने यह साबित किया कि पिंडारी, मराठा क्षेत्रों में भी हमला करते थे, और खुद दौलत राव सिंधिया ने पिंडारियों को दबाने के लिए अपनी सेनाएं भेजी थीं। 1815 में सिंधिया ने पिंडारियों के साथ एक समझौता किया, जिसके तहत पिंडारियों ने लूटपाट छोड़ने और सिंधिया की ज़मीन पर रहने का वादा किया।

गवर्नर-जनरल की परिषद के उपाध्यक्ष एडमोनस्टोन ने कहा था कि सिंधिया पिंडारियों को खत्म करने के लिए सचमुच ईमानदार थे और उन्होंने उनसे अपने रिश्ते तोड़ने की कोशिश की। लेकिन गवर्नर-जनरल लॉर्ड हैस्टिंग्स को सिंधिया के साथ लड़ाई की इच्छा थी। उन्होंने अपनी डायरी में लिखा था कि "यह बेहतर होगा यदि सिंधिया पिंडारियों का समर्थन करके खुद को खतरे में डाल दे।" असल में, हैस्टिंग्स को पिंडारियों के खिलाफ अभियान के लिए सिंधिया की मदद की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे पिंडारियों से युद्ध करके इसे मराठा युद्ध का सही मौका मानते थे।[12]

ब्रिटिश गवर्नर-जनरल लॉर्ड हैस्टिंग्स ने पिंडारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने और उनका दमन करने का निर्णय लिया। इसके लिए, उन्होंने मराठा सरदारों, राजपूत राजाओं और भोपाल के शासक से मदद ली। इस रणनीति का उद्देश्य पिंडारियों को पराजित करना था। 1816 में, हैस्टिंग्स ने ब्रिटिश सेना के साथ पिंडारियों के खिलाफ एक निर्णायक युद्ध की योजना बनाई और इस कार्य के लिए 1,13,000 सैनिकों और 300 तोपों की एक बड़ी सेना तैयार की। लॉर्ड हैस्टिंग्स ने सेना के उत्तरी कमान का नेतृत्व खुद किया और डेक्कन सेना का नेतृत्व सर थॉमस हिपल को सौंपा। पिंडारी धीरे-धीरे हर क्षेत्र से खदेड़े गए और उनका संगठन समाप्त हो गया।

➢ मध्यभारत मे पिंडरियों का दमन

1817 के अंत तक, पिंडारी चंबल घाटी से बाहर खदेड़े गए और जनवरी 1818 तक उनके संगठित समूह नष्ट हो गए। पिंडरियो के नेता करीम खान ने मैल्कम के पास आत्मसमर्पण किया, वसील मुहम्मद ने सिंधिया के शिविर में शरण ली, लेकिन बाद में उसने आत्महत्या कर ली। अन्य पिंडारी नेता चितू को जंगलों में शरण मिली, लेकिन एक बाघ ने उसे मार डाला।

इस प्रकार, पिंडारी संकट का अंत हो गया और उनका प्रभाव समाप्त हो गया। 1824 में, ब्रिटिश लेखक मैल्कम ने लिखा, "पिंडारी प्रभावी रूप से नष्ट हो गए हैं, उनका नाम लगभग भुला दिया गया है।" इतिहासकार डफ ने भी कहा, "पिंडारी बिखर गए, बिना नेताओं के और बिना किसी ठिकाने के।"

➢ निष्कर्ष –

पिंडारियों का ऐतिहासिक विश्लेषण मध्य भारत के शक्ति संतुलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। 17वीं से 19वीं शताब्दी तक, पिंडारी अनियमित घुड़सवारों ने मराठा सेनाओं के साथ मिलकर और स्वतंत्र रूप से लूटपाट, हमले और दुश्मन की जमीन पर कब्जा करने में सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी गतिविधियों ने मध्य भारत में व्यापक आर्थिक और सामाजिक नुकसान पहुंचाया, जिससे वे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और स्थानीय सुल्तानों के लिए एक बड़ा खतरा बन गए । पिंडारियों के पतन के बाद, मध्य भारत में मराठा शक्ति कमजोर हुई और ब्रिटिश प्रभाव बढ़ा। पिंडारियों का इतिहास मध्य भारत के शक्ति संतुलन में बदलाव और ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। उनकी गतिविधियों ने क्षेत्र की राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज पर गहरा प्रभाव डाला।

इस प्रकार, मध्यभारत से पिंडारी का संकट समाप्त हो गया और उनकी लूटपाट की गतिविधियाँ पूरी तरह से नष्ट हो गईं। मध्यभारत से 1824 तक पिंडारी प्रभावी रूप से समाप्त हो गए थे, और उनका नाम इतिहास के पन्नों में खो गया। पिंडारी सेना के विघटन ने

ब्रिटिश साम्राज्य को भारतीय उपमहाद्वीप में एक और मजबूत स्थिति में ला खड़ा किया, और उनके खिलाफ संघर्ष ने मराठा और ब्रिटिश सत्ता के बीच जटिल राजनीतिक रिश्तों को और भी स्पष्ट किया।

➢ संदर्भ सूची –

1. Ferishta, History of the Decann, Tran, J. Scott, Vol. II, p. 177
2. Manucci-Storia Do Mogor (1653-1708), Ed. W. Irvine, vol. II. P. 459
3. पेशवा डायरी, खंड 9 पृष्ठ 324
4. एस.एन. सेन, मराठों की प्रशासनिक व्यवस्था, पृष्ठ 583
5. पेशवा डायरी, खंड 9, पृष्ठ 304/325
6. जीएस सरदेसाई , मराठाओं का नया इतिहास, खंड III, पृष्ठ 477
7. Memorandum prepared by Jenkins in 1812, Military Records, Vol. 212, p. 28
8. Military Records, vol. 212, p. 29
9. कप्तान जे.एस. विल्सन बी.पी.सी. द्वारा पिंडारियों की आदतों पर अवलोकन, 7 अप्रैल 1817, क्रमांक 38
10. नागपुर में रेजिडेंट जेनकिंस द्वारा 1812 में तैयार किया गया ज्ञापन, सैन्य अभिलेख खंड 212, पृष्ठ 8
11. R. W. Fraser, British India, London, 1896, 7th edition (London: T. Fisher Unwin Ltd., 1916), p. 187.
12. For further discussion see Birendra Kumar Sinha, The Pindaris: 1798-1818 (Calcutta: Bookland, 1971), pp. 1-5